पूजा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
श्री
दुर्गा
नवरात्र
व्रतकथा
चालीसा एवं
आरती सहित
पूजा प्रकाशन, दिल्ली

श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा

प्रस्तुत पुस्तक में पूजन सामग्री, हवन सामग्री, दुर्गा अष्टमी व्रत कथा, दुर्गा देवी के नौ रूपों की कथायें, दुर्गा चालीसा, सर्वकामना सिद्ध प्रार्थना नित्यप्रति पढ़ें, श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम, दुर्गाजी की आरती सरल हिन्दी भाषा में दी गई है।

दुर्गा यन्त्र

प्रकाशक
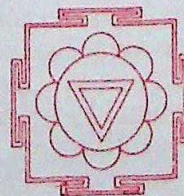
स्थापित सन् 1984

पूजा प्रकाशन

(सदर बाजार रेलवे स्टेशन के बराबर में, दरगाह के बाहर), पुल कुतुब रोड, सदर बाजार,

दिल्ली-110006 (भारत) फोन : 9811716164, 9868116164, 011-45516164

Email : gargbooks@yahoo.co.in sales@poojaprakashan.com Visit us : www.poojaprakashan.com

मूल्य 30/- रुपए

पूजन सामग्री

शास्त्रोक्त विधान तो विविध मन्त्रों का स्तवन करते हुए मातेश्वरी की सोलह संस्कारों से पूर्ण षोडशोपचार आराधना करने का है, जबकि अधिकांश व्यक्ति सामान्य रूप से मातेश्वरी की पंचोपचार अथवा दशोपचार पूजा करते हैं। पूर्ण-पूजा-आराधान करते समय हमको मुख्य रूप से निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है—

मातेश्वरी की मूर्ति अथवा चित्र और उस मूर्ति को स्थापित करने हेतु पटरा अथवा सिंहासन और बिछाने हेतु लाल कपड़ा अथवा टूल।

पूजा-पात्र—पानी का लोटा, आचमनी अर्थात् चम्मच, दीप-पात्र, धूप-पात्र, घण्टी, शंख, थाली, कटोरी व अन्य बर्तन तथा कलश।

पूजन-सामग्री—रोली, चन्दन, स्वच्छ चावल, मोली अर्थात् कलावा, काजल, सिन्दूर, बिन्दी व अन्य श्रृंगार का सामान। वस्त्र, यज्ञोपवीत, जौ, फूल, पुष्पमाला, दुर्वा, तुलसीदल, बेलपत्र, पंचपल्लव, धूप, दीप, सुपारी, पान, कपूर, केशर, लौंग, इलायची, पीली सरसों, जल, गंगाजल, नारियल, फल, मिठाई, पंचमेवा तथा दूध, दही, घृत, शहद और गंगाजल से निर्मित पंचामृत।

हवन सामग्री व विधि

नवरात्रों में पूजा के साथ-साथ देवी के निमित्त हवन करने का विशिष्ट महत्व है और सर्वकामना पूरक माना जाता है इस हवन को। यद्यपि अधिकांश परिवारों में जलते हुए कण्डे पर लौंग के जोड़े, गुग्गुल, घी और हवन सामग्री डालकर ही देवी की ज्योति जलायी जाती है। जहाँ तक शास्त्रीय विधान का प्रश्न है बालू की वेदी बनाकर और उसे आटे से सजाकर ढाक की लकड़ियाँ रख दीजिए। धूप की कटोरी बनाकर उसमें कपूर रखकर प्रज्वलित करने के बाद एक सौ आठ आहुतियां दी जाती हैं और अन्त में सूखे गोले में हवन सामग्री भरकर पूर्णाहूति दी जाती है। हवन सामग्री तैयार करने हेतु काले बिना धुले तिल, तिलों के आधे चावल, चौथाई जौ और आठवाँ भाग बूरा अथवा चीनी मिलाएँ। इस मिश्रण में इच्छानुसार अगर, तगर, चन्दन का बुरादा, जटामांसी, इन्द्रजौ तथा अन्य जड़ी-बूटियाँ आदि मिला लीजिए। थोड़ा देशी घी भी इस सामग्री में मिलाया जाएगा और प्रत्येक आहुति के साथ चम्मच से थोड़ा-थोड़ा घी हवन में डाला जाएगा। पूर्णाहूति के लिए साबूत गिरी के गोले की टोपी उतारकर उसमें पान का पत्ता, सुपारी और उपरोक्त मिश्रण तथा घी भरकर टोपी लगा दें और इसे सीधा ही अग्नि के मध्य में रख दें।

श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा
व्रत विधि

इस व्रत में उपवास या फलाहार आदि का कोई विशेष नियम नहीं है। प्रातः उठकर स्नान करके, मन्दिर में जाकर या घर पर ही नवरात्रों में दुर्गा जी का ध्यान करके व्रत रखना चाहिए, कथा पढ़नी चाहिए। कन्याओं के लिए यह व्रत विशेष फलदायक है। श्री जगदम्बा की कृपा से सब विघ्न दूर होते हैं। कथा के अंत में बारम्बार ''दुर्गा माता तेरी सदा ही जय'' का उच्चारण करें।

नवरात्र व्रत कथा प्रारंभ

वृहस्पतिजी बोले—हे ब्रह्माजी आप अत्यन्त बुद्धिमान, सर्वशास्त्र और चारों वेदों को जानने वालों में श्रेष्ठ हो। हे प्रभु! कृपा कर मेरा वचन सुनो। चैत्र, आश्विन, माघ और आषाढ़ के शुक्ल पा में नवरात्र का व्रत और उत्सव क्यों किया जाता है? हे भगवन्! इस व्रत का फल क्या है? किस प्रकार करना उचित है और पहले इस व्रत को किसने किया है? सो विस्तार से कहो। वृहस्पति जी का ऐसा वचन सुनकर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे वृहस्पति! प्राणियों का हित करने की इच्छा से तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। जो मनुष्य मनोरथ पूर्ण करने वाली दुर्गा, महादेव, सूर्य और नारायण का ध्यान करते हैं वे मनुष्य धन्य हैं। यह नवरात्र का व्रत सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इसके करने से पुत्र चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, विद्या चाहने वाले को विद्या और सुख चाहने वाले को सुख मिल सकता है। इस व्रत के करने से रोगी मनुष्य का रोग दूर हो जाता है और कारागर में बन्द हुआ मनुष्य बन्धन से छूट जाता है। मनुष्य की समस्त विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं और उसके घर में सम्पूर्ण सम्पतियाँ आकर उपस्थित हो जाती हैं। बन्ध्या और काक बन्ध्या के इस व्रत के करने से पुत्र पैदा हो जाता है। समस्त पापों को दूर करने वाले इस व्रत के करने से ऐसा कौन सा मनोरथ है जो सिद्ध नहीं हो सकता है। जो प्राणी इस अलभ्य मनुष्य देह को

पाकर भी नवरात्र का व्रत नहीं करता है वह अनेक प्रकार से दुखी रहता है। यदि व्रत करने वाला मनुष्य सारे दिन का उपवास न कर सके तो एक समय भोजन करे और उस दिन बांधवों सहित नवरात्र व्रत की कथा का श्रवण करे। हे वृहस्पते! जिसने पहले इस महाव्रत को किया उसका पवित्र इतिहास मैं तुम्हें सुनाता हूहूँ। तुम सावधान होकर सुनो-इस प्रकार ब्रह्माजी का वचन सुनकर वृहस्पति जी बोले-हे ब्राह्मण मनुष्यों का कल्याण करने वाले इस व्रत को कहो मैं सावधान होकर सुन रहा हूहूँ। आपकी शरण आए हुए मुझ पर कृपा करो। ब्रह्माजी बोले-पीठत मनोहर नगर में एक अनाथ नाम का ब्राह्मण रहता था। वह भगवती दुर्गा का भक्त था। उसके सम्पूर्ण सद्‌गुणों से युक्त मानो ब्रह्मा की सबसे पहली रचना हो ऐसी यथार्थ नाम वाली सुमति नाम की एक अत्यन्त सुन्दर पुत्री पैदा हुई। वह कन्या सुमति अपने पिता के घर बालकपन में अपनी सहेलियों के साथ क्रीड़ा करती हुई इस प्रकार बढ़ने लगी कि जैसे शुक्लपा की कला बढ़ती है। उसका पिता प्रतिदिन जब दुर्गा की पूजा और होम किया करता उस समय वह भी नियम से वहाँ उपस्थित रहती थी। एक दिन वह सुमति अपनी सखियों के साथ खेलने लग गई और भगवती के पूजन में उपस्थित नहीं हुई। उसके पिता को पुत्री की ऐसी असावधानी देखकर क्रोध आया और पुत्री से कहने लगा कि हे दुष्ट पुत्री! आज प्रभात से तूने भगवती का पूजन नहीं किया, इस कारण मैं किसी कुष्ठी और दरिद्री मनुष्य के साथ तेरा विवाह करूँगा। इस प्रकार कुपित पिता का वचन सुनकर समुति को बड़ा दुःख हुआ और पिता से कहने लगी-हे पिताजी! मैं आपकी कन्या हूहूँ। मैं सब तरह से आपके आधीन हूहूँ। जैसी आपकी इच्छा हो मेरा विवाह कर सकते हैं, पर होगा वही जो मेरे भाग्य में लिखा है मेरा तो इस पर पूर्ण विश्वास है। मनुष्य न जाने कितने मनोरथों का चिन्तन करता है पर होता वही है जो भाग्य में विधाता ने लिखा है। जो जैसा कार्य करता है, उसको फल भी उसी कर्म के अनुसार मिलता है, क्योंकि कर्म करना मनुष्य के आधीन है पर फल दैव के आधीन है। जैसे अग्नि में पड़े तृणादि उसको अधिक प्रदीप्त कर देते हैं उसी प्रकार अपनी कन्या के ऐसे निर्भयता से कहे हुए वचन सुनकर उस ब्राह्मण को और अधिक क्रोध आया। तब उसने अपनी कन्या का विवाह एक कुष्ठी के साथ कर दिया और अत्यन्त क्रुद्ध होकर पुत्री से कहने लगा जाओ-जाओ, जल्दी जाओ और अपने कर्म का फल भोगो। देखें

भला भाग्य के भरोसे रहकर क्या करती है ? इस प्रकार से कहे हुए पिता के कटु वचनों को सुनकर सुमति मन में विचार करने लगी कि-अहो मेरा बड़ा दुर्भाग्य है जिससे मुझे ऐसा पति मिला। इस तरह अपने दुःख का विचार करती हुई वह सुमति अपने पति के साथ वन में चली गई और भयावने कुशा युक्त उस स्थान पर उन्होंने वह रात बड़े कष्ट से व्यतीत की। उस गरीब बालिका की ऐसी दशा देखकर भगवती पूर्व पुण्य के प्रभाव से प्रकट होकर सुमति से कहने लगी कि हे दीन ब्राह्मणी! मैं तुम पर प्रसन्न हूहूँ तुम जो चाहो सो वरदान माँग सकती हो। मैं प्रसन्न होने पर मनवाँछित फल देने वाली हूहूँ। इस प्रकार भगवती दुर्गा का वचन सुनकर ब्राह्मणी कहने लगी कि आप कौन हैं जो मुझ पर प्रसन्न हुई हैं। यह सब मुझसे कहो और अपनी कृपा दृष्टि से मुझ दीन दासी को कृतार्थ करो। ऐसा ब्राह्मणी का वचन सुनकर देवी कहने लगी कि मैं आदिशक्ति हूँ और मैं ही ब्रह्मविद्या और सरस्वती हूँ। मैं प्रसन्न होने पर प्राणियों का दुःख दूर कर उनको सुख प्रदान करती हूहूँ। हे ब्राह्मणी! मैं तुझ पर तेरे पूर्व जन्म के पुण्य के प्रताप से प्रसन्न हूँ। तुम्हारे पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाती हूहूँ सुनो! तू पूर्व जन्म में निषाद (भील) की स्त्री थी और अति पतिव्रता थी। एक दिन तेरे पति निषाद ने चोरी की। चोरी करने के कारण तुम दोनों को सिपाहियों ने पकड़ लिया और ले जाकर जेलखाने में कैद कर दिया। उन लोगों ने तुझे और तेरे पति को भोजन भी नहीं दिया। इस प्रकार नवरात्र के दिनों में तुमने न तो कुछ खाया और न जल ही पिया। इसलिए नौ दिन तक नवरात्र का व्रत हो गया। हे ब्राह्मणी! उन दिनों में जो व्रत हुआ उस व्रत के प्रभाव से प्रसन्न होकर मैं तुम्हें मनोवाँछित फल दे रही हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो सो माँगो। इस प्रकार दुर्गा के दिए वचन सुनकर ब्राह्मणी बोली कि मैं आपको प्रणाम करती हूहूँ। कृपा कर मेरे पति के कोढ़ को दूर करो। देवी कहने लगी कि उन दिनों में जो तुमने व्रत किया उस व्रत के एक दिन का पुण्य अपने पति का कोढ़ दूर करने को अर्पण करो। मेरे प्रभाव से तेरा पति कोढ़ से रहित और सोने के समान शरीर वाला हो जाएगा। ब्रह्मा जी बोले कि इस प्रकार देवी के वचन सुनकर वह ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई और पति को निरोग करने की इच्छा से ठीक है, ऐसे बोली। तब उसके पति का शरीर भगवती दुर्गा की कृपा से कुष्ठहीन होकर अति कान्तियुक्त हो गया। जिसकी कान्ति के सामने चन्द्रमा की कान्ति भी क्षीण हो जाती है। वह ब्राह्मणी पति की मनोहर देह को

देखकर देवी को अति पराक्रम वाली समझ कर स्तुति करने लगी-हे दुर्गे! आप दुर्गति को दूर करने वाली, तीनों जगत का सन्ताप हरने वाली, समस्त दुःखों को दूर करने वाली, रोगी मनुष्य को निरोग करने वाली, प्रसन्न होने पर मनवाँछित वस्तु देने वाली और दुष्ट मनुष्यों का नाश करने वाली हो। तुम ही सारे जगत की माता और पिता हो। हे अम्बे! मुझ निअपराध अवला का मेरे पिता ने कुष्ठी मनुष्य के साथ विवाह कर मुझे घर से निकाल दिया। उनकी निकाली हुई मैं पृथ्वी पर घूमने लगी। आपने ही मेरा इस आपत्ति रूपी समुद्र से उद्धार किया है। हे देवी! मैं आपको प्रणाम करती हूहूँ। मुझ दीन की रा करो। ब्रह्माजी बोले कि हे वृहस्पते! इसी प्रकार उस सुमति ने मन से देवी की बहुत स्तुति की और उसके द्वारा की हुई स्तुति को सुनकर सुमति पर देवी को बहुत सन्तोष हुआ और ब्राह्मणी से कहने लगी-हे ब्राह्मणी! तेरे उद्दालक नाम का अति बुद्धिमान, कीर्तिमान और जितेन्द्रिय पुत्र शीघ्र ही होगा। ऐसा कहकर वह देवी उस ब्राह्मणी से फिर कहने लगी कि हे ब्राह्मणी और जो कुछ तेरी इच्छा हो वही मनवाँछित वस्तु माँग सकती है। ऐसा भगवती दुर्गा का वचन सुनकर सुमति बोली कि हे दुर्गे! अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे नवरात्र व्रत विधि बतलाइये। हे दयामयी! जिस विधि से नवरात्र व्रत करने से आप प्रसन्न होती हैं उस विधि तथा उसके फल को मुझसे विस्तारपूर्वक कहें। इस प्रकार ब्राह्मणी के कहे वचन सुनकर माँ दुर्गा कहने लगी कि हे ब्राह्मणी! मैं सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाली नवरात्र व्रत की विधि बतलाती हूँ जिसको करने से समस्त पापों से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। आश्विन मास में शुक्लपा की प्रतिपदा से लेकर नौ दिन तक विधिपूर्वक व्रत करे। यदि दिन भर का व्रत न कर सके तो एक समय भोजन करे। पढ़े लिखे ब्राह्मणों से पूछ कर घट स्थापना करे और वाटिका बनाकर उसको प्रतिदिन जल से सींचे। महाकाली, महालमी और महासरस्वती की मूर्तियाँ बनाकर उनको नित्य विधि सहित पूजा करे और पुष्पों से विधिपूर्वक अर्घ्य दे। बिजौरा के फूल द्वारा अर्घ्य देने से रूप की प्राप्ति होती है और जायफल से कीर्ति तथा दाख से कार्य की सिद्धि होती है। आँवले से सुख और केले से भूषण की प्राप्ति होती है। इस प्रकार फलों से अर्घ्य देकर यथा विधि हवन करे। खाँड, घी, गेहूँ, शहद, जौ, तिल, बिल्व,

नारियल, दाख, और कदम्ब से हवन करे। गेहूँ से होम करने से लमी की प्राप्ति होती है। खीर तथा चम्पा के पुष्पों से धन और पत्तों से तेज एवं सुख की प्राप्ति होती है। आँवले से कीर्ति और केले से पुत्र होवे। कमल से राज-सम्मान और दाखों से सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। खाँड, घी, नारियल, शहद, जौ, और तिल इनसे तथा फलों से होम करने से मनवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है। व्रत कहने वाला मनुष्य इस विधान से होमकर आचार्य को अत्यन्त नम्रता के साथ प्रणाम करे और यज्ञ की सिद्धि के लिए उसे दाणिा दे। इस महाव्रत को पहले बताई हुई विधि के अनुसार जो करता है उसके सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। इसमें तनिक भी संशय नहीं है। इन नौ दिनों में जो कुछ दान आदि दिया जाता है, उसका करोड़ों गुना फल मिलता है। इस नवरात्र का व्रत करने से ही अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। हे ब्राह्मणी! इस सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले उत्तम व्रत को तीर्थ, मन्दिर अथवा घर में ही विधि के अनुसार करे। ब्रह्माजी बोले- हे वृहस्पति! इस प्रकार ब्राह्मणी को व्रत की विधि और फल बताकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई। जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को भक्तिपूर्वक करता है वह इस लोक में सुख पाकर अन्त में दुर्लभ मो को प्राप्त होता है। हे वृहस्पते! यह दुर्लभ व्रत का माहात्म्य मैंने तुम्हारे लिये बतलाया है। ऐसे ब्रह्माजी के वचन सुनकर वृहस्पतिजी आनन्द के कारण रोमांचित हो गए और ब्रह्माजी से कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! आपने मुझ पर अति कृपा की जो अमृत के समान इस नवरात्र व्रत का माहात्म्य सुनाया। हे प्रभो! आपके बिना और कौन इस माहात्म्य को सुना सकता है? ऐसे वृहस्पतिजी के वचन सुनकर ब्रह्माजी बोले- हे वृहस्पति! तुमने सब प्राणियों का हित करने वाले इस अलौकिक व्रत को पूछा इसलिये तुम धन्य हो। यह भगवती शक्ति सम्पूर्ण लोकों की पालन करने वाली है, इस महादेवी के प्रभाव को कौन जान सकता है।

श्री दुर्गा अष्टमी व्रत कथा

विधि—यह त्यौहार आश्विन शुक्लपक्ष अष्टमी को आता है। इस दिन दुर्गा देवी की पूजा की जाती है। भगवती दुर्गा को उबले हुए चने, हलुआ, पूड़ी, खीर, पूआ आदि का भोग लगाया जाता है। बहुत से व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के

लिए हवन आदि भी करते हैं। जहाँ शक्ति को अधिक मान्यता दी जाती है वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कन्या लंगुरा जिमावे। देवी जी की जोत करे।

कथा—हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्रों के अनुसार दुर्गा देवी नौ रूपों में प्रकट हुई है। उन सब रूपों की पृथक-पृथक् कथा इस प्रकार है—

महाकाली

एक बार पूरा संसार प्रलय ग्रस्त हो गया था। चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता था। उस समय भगवान् विष्णु की नाभि से एक कमल उत्पन्न हुआ। उस कमल से ब्रह्माजी निकले। इसके अलावा भगवान् नारायण के कानों में से कुछ मैल भी निकला, उस मैल से कैटभ और मधु नाम के दो दैत्य बन गए। जब उन दैत्यों ने चारों ओर देखा तो ब्रह्माजी के अलावा उन्हें कुछ भी नहीं दिखाई दिया। ब्रह्माजी को देखकर वे दैत्य उनको मारने दौड़े। तब भयभीत होकर ब्रह्माजी ने विष्णु भगवान् की स्तुति की।

स्तुति से विष्णु भगवान् की आँखों में जो महामाया योग निद्रा के रूप में निवास करती थी वह लोप हो गई और विष्णु भगवान् की नींद खुल गई। उनके जागते ही वे दोनों दैत्य भगवान् विष्णु से लड़ने लगे। इस प्रकार पाँच हजार वर्ष तक युद्ध चलता रहा। अन्त में भगवान् की रक्षा के लिए महामाया ने असुरों की बुद्धि को बदल दिया। तब वे असुर विष्णु भगवान् से बोले—हम आपके युद्ध से प्रसन्न हैं जो चाहो वर माँग लो। भगवान् ने मौका पाया और कहने लगे—यदि हमें वर देना है तो यह वर दो कि—दैत्यों का नाश हो। दैत्यों ने कहा—ऐसा ही होगा। ऐसा कहते ही महाबली दैत्यों का नाश हो गया। जिसने असुरों की बुद्धि को बदला था वह 'महाकाली' थी।

महालक्ष्मी

एक समय महिषासुर नाम का एक दैत्य हुआ। उसने समस्त राजाओं को हराकर पृथ्वी और पाताल पर अपना अधिकार जमा लिया। जब वह देवताओं से युद्ध करने लगा तो देवता भी उससे युद्ध में हार कर भागने लगे। भागते-भागते वे भगवान् विष्णु के पास पहुँचे और उस दैत्य से बचने के लिए स्तुति करने लगे। देवताओं की स्तुति करने से भगवान् विष्णु और शंकर जी जब प्रसन्न हुए, तब उनके शरीर से एक तेज निकला। जिसने महालक्ष्मी का रूप धारण कर लिया। इन्हीं महालक्ष्मी ने महिषासुर को युद्ध में मारकर देवताओं का कष्ट दूर किया।

महासरस्वती या चामुण्डा

एक समय शुम्भ-निशुम्भ नाम के दो दैत्य बहुत बलशाली हुए। उनसे युद्ध में मनुष्य तो क्या देवता तक हार गए। जब देवताओं ने देखा कि अब युद्ध में नहीं जीत सकते तब वह स्वर्ग छोड़कर भगवान् विष्णु की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान् विष्णु के शरीर में से एक ज्योति प्रकट हुई जो कि महासरस्वती थीं। महासरस्वती अत्यन्त रूपवान थीं। उनका रूप देखकर वे दैत्य मुग्ध हो गए और अपना सुग्रीव नाम का दूत उस देवी के पास अपनी इच्छा प्रकट करते हुए भेजा। उस दूत को देवी ने वापिस कर दिया। इसके बाद उन दोनों ने कुछ सोच समझकर अपने सेनापति धूम्राक्ष को सेना सहित भेजा, जो देवी द्वारा सेना सहित मार दिया गया। फिर चण्ड-मुण्ड लड़ने आए और वह भी मार डाले गये। इसके बाद रक्तबीज लड़ने आया, जिसके रक्त की बूँद जमीन पर गिरने से एक वीर पैदा होता था। वह बहुत बलवान था उसे भी देवी ने मार गिराया। अन्त में चामुण्डा से शुम्भ-निशुम्भ स्वयं दोनों लड़ने आये और देवी के हाथों मारे गए। सभी देवता दैत्यों की मृत्यु के बाद बहुत खुश हुए और अपना-अपना कार्य करने लगे।

योगमाया

जब कंस ने वसुदेव-देवकी के छः पुत्रों का वध कर दिया था और सातवें गर्भ में शेषनाग बलरामजी आये जो रोहिणी के गर्भ में प्रवेश होकर प्रकट हुए। तब आठवाँ जन्म कृष्ण जी का हुआ। साथ ही साथ गोकुल में यशोदाजी के गर्भ में योगमाया का जन्म हुआ जो वसुदेवजी द्वारा कृष्ण के बदले मथुरा में लाई गई थी। जब कंस ने कन्या स्वरूपा उस योगमाया को मारने के लिए पटकना चाहा कि वह हाथ से छूट गई और आकाश में जाकर देवी का रूप धारण कर लिया। आगे चलकर इसी योगमाया ने कृष्ण के साथ योग विद्या और महाविद्या बनकर कंस, चाणूर आदि शक्तिशाली असुरों का संहार करवाया।

रक्त-दन्तिका

एक बार वैप्रचित्ति नाम के असुर ने बहुत से कुकर्म करके पृथ्वी को व्याकुल कर दिया। उसने मनुष्य ही नहीं बल्कि देवताओं तक को बहुत दुःख दिया। देवताओं और पृथ्वी की प्रार्थना पर उस समय दुर्गा देवी ने रक्त दन्तिका नाम से अवतार लिया और वैप्रचित्ति आदि असुरों का मान-मर्दन कर डाला। यह देवी असुरों को मार कर उनका रक्तपान किया करती थी, इस कारण से इनका नाम 'रक्त-दन्तिका' विख्यात हुआ।

शाकुम्भरी

एक समय पृथ्वी पर लगातार सौ वर्ष तक पानी की वर्षा नहीं हुई। इस कारण चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी जीव भूख और प्यास से व्याकुल हो मरने लगे। उस समय मुनियों ने मिलकर देवी भगवती की उपासना की। तब जगदम्बा ने शाकुम्भरी नाम से स्त्री रूप में अवतार लिया और उनकी कृपा से जल की वर्षा हुई जिससे पृथ्वी के समस्त जीवों को जीवन दान प्राप्त हुआ।

भ्रामरी देवी

एक बार अत्याचारी अरुण नाम का एक असुर पैदा हुआ। उसने स्वर्ग में जाकर उपद्रव करना शुरू कर दिया। देवताओं की पत्नियों का सतीत्व नष्ट करने की कुचेष्टा करने लगा। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए देव-पत्नियों ने भौरों का रूप धारण कर लिया और दुर्गा देवी की प्रार्थना करने लगीं। देव-पत्नियों को दुखी जानकर माता दुर्गा ने भ्रामरी का रूप धारण करके उस असुर को मार डाला और देव-पत्नियों की रक्षा की।

चण्डिका

एक बार पृथ्वी पर चण्ड-मुण्ड नाम के दो राक्षस पैदा हुए। वे दोनों इतने बलवान थे कि संसार में अपना राज्य फैला लिया और स्वर्ग के देवताओं को हराकर वहाँ भी अपना अधिकार जमा लिया।

इस प्रकार देवता बहुत दुखी हुए और देवी की स्तुति करने लगे। तब देवी चण्डिका के रूप में अवतरित हुई और चण्ड-मुण्ड नामक राक्षसों को मार कर संसार का दुःख दूर किया। देवताओं का गया हुआ स्वर्ग पुनः उन्हें दिया। इस प्रकार चारों ओर सुख का राज्य छा गया।

श्री दुर्गा जी

एक समय भारतवर्ष में दुर्गम नाम का राक्षस हुआ। उसके डर से पृथ्वी ही नहीं, स्वर्ग और पाताल में निवास करने वाले लोग भयभीत रहते थे। ऐसी विपत्ति के समय में भगवान् की शक्ति ने दुर्गा या दुर्गसेनी के नाम से अवतार लिया और दुर्गम राक्षस को मार कर ब्राह्मणों और हरि भक्तों की रक्षा की। दुर्गम राक्षस को मारने के कारण ही तीनों लोकों में इनका नाम दुर्गा देवी प्रसिद्ध हो गया।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुःख हरनी॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूहुँ लोक फैली उजियारी॥
शशि ललाट मुख महाविशाला। नेत्र लाल भृकुटी विकराला॥
रूप मातु को अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे॥
तुम संसार शक्ति लय कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना॥
अन्नपूर्णा हुई जगपाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिव शंकर प्यारी॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें। ब्रह्मा, विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥
रूप सरस्वती का तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़ कर खम्बा॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो। हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं॥
'ीरसिन्धु में करत विलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी॥
मातंगी अरु धूमावति माता। भुवनेश्वरि बगला सुखदाता॥
श्री भैरव तारा जग तारिणि। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणि॥
केहरि वाहन सोह भवानी। लांगुर बीर चलत अगवानी॥
कर में खप्पर खड्ग विराजे। जाको देख काल डर भाजे॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला॥
नगरकोट में तुम्हीं बिराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत॥

शुम्भ निशुम्भ दैत्य तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालिका धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥
परी गाढ़ संतन पर जब-जब। भई सहाय मातु तुम तब-तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका। तब महिमा सब रहें अशोका ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावे। दुःख दारिद्र निकट नहिं आवे ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्ममरण ते सो छुटि जाई ॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आचारज तप कीनो। काम और क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशिदिन ध्यान करो शंकर को। काहुँ काल नहिं सुमिरो तुमको ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी। जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावें। मोह मदादिक सब विनशावें ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धि-सिद्धि दे करहुँ निहाला ॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ। तुम्हारो यश मैं सदा सुनाऊँ ॥
दुर्गा चालीसा जो कोई गावे। सब सुख भोग परमपद पावे ॥
देवीदास शरण निज जानी। करहुँ कृपा जगदम्ब भवानी ॥

सर्व कामना सिद्ध प्रार्थना नित्यप्रति पढ़ें

भगवती भक्ति करो प्रदान, तुम भगवान् की। फिर करो अम्बे अमर, यश कीर्ति सन्तान की॥ १ ॥
तुम ही बचाओ आनकर हे कालिके आ काल से। गोद में गौरी उठा, करो प्यार अपने लाल से॥ २ ॥
चिन्तपुरनी आ हटा चिन्ता बचा ले पाप से। लमी लाखों के भरे भण्डारे अपने आप से॥ ३ ॥
नयनादेवी आओ नयनन में बिराजो आन तुम। वैष्णवी माता बचा, विषयों से निज सन्तान तुम॥ ४ ॥
मंगला मंगलमुखी मंगल करो न नार में। चण्डिका चढ़ शेर पर, सुख दो सकल परिवार में॥ ५ ॥
भद्रकाली भद्र पुरुषों में, मेरा सम्मान हो। ज्वाला मन की जलन हर, चर्णों में तेरे ध्यान हो॥ ६ ॥
चामुण्डा चारों धाम चरणों में तेरे विश्राम हो। माता मन बेचैन तुम में लीन आठों याम हो॥ ७ ॥

श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम

अनन्त हैं भगवती के रूप और असंख्य हैं उनके नाम। उनके एक हजार नामों का श्रीदुर्गा सहस्रनाम तो है ही, एक सौ आठ नामों वाला यह अष्टोत्तर शतनाम भी लगभग उतना ही प्रभावशाली है और भक्ति-मुक्ति-प्रदायक है। मातेश्वरी पार्वती जी के प्रर्थना करने पर भगवती दुर्गा के ये प्रमुख एक सौ आठ नाम भगवान् शिव ने स्वयं इस क्रम से बतलाए थे—

१. सती, २. साध्वी, ३. भवप्रीता, ४. भवानी, ५. भवमोचनी, ६. आर्या, ७. दुर्गा, ८. जया, ९. आद्या, १०. त्रिनेत्रा, ११. शूलधारिणी, १२. पिनाक धारिणी, १३. चित्रा, १४. चन्द्रघण्टा, १५. महातपा, १६. मनः, १७. बुद्धि, १८. अहंकारा, १९. चित्तरूपा, २०. चिता, २१. चिति, २२. सर्वमन्त्रमयी, २३. सत्ता, २४. सत्यानन्द स्वरूपणी, २५. अनन्ता, २६. भाविनी, २७. भाव्या, २८. भव्या, २९. अभव्या, ३०. सदागति, ३१. शाँभवी, ३२. देवमाता, ३३. चिन्ता, ३४. रत्नप्रिया,

३५. सर्वविद्या, ३६. दाकन्या, ३७. दायज्ञविनाशिनी, ३८. अपर्णा, ३९. अनेकवर्ण, ४०. पाटला, ४१. पाटलावती, ४२. पट्टाम्बरपरीधाना, ४३. कलमंजीररंजिनी, ४४. अमेय विक्रमा, ४५. क्रूरा, ४६. सुन्दरी, ४७. सुरसुन्दरी, ४८. वनदुर्गा, ४९. मातंगी, ५०. मतंगमुनिपूजिता, ५१. ब्राह्मी, ५२. माहेश्वरी, ५३. ऐन्द्री, ५४. कौमारी, ५५. वैष्णवी, ५६. चामुण्डा, ५७. वाराही, ५८. लक्ष्मी, ५९. पुरुषाकृति, ६०. विमला, ६१. उत्कर्षिनी, ६२. ज्ञाना, ६३. क्रिया, ६४. नित्या, ६५. बुद्धिदा, ६६. बहुला, ६७. बहुलप्रेमी, ६८. सर्ववाहनवाहना, ६९. निशुम्भशुम्भ हननी, ७१. महिषासुरमर्दिनी, ७१. मधुकैटभहन्त्री, ७२. चण्डमुण्ड विनाशिनी, ७३. सर्वअसुरविनाशा, ७४. सर्वदानवघातिनी, ७५. सत्या, ७६. सर्वास्त्रधारिणी, ७७. अनेकशस्त्रहस्ता, ७८. अनेकास्त्रधारिणी, ७९. कुमारी, ८०. एक कन्या, ८१. कैशोरी, ८२. युवती, ८३. यतिः, ८४. अप्रौढ़ा, ८५. प्रौढ़ा, ८६. वृद्धमाता, ८७. बलप्रदा, ८८. महोदरी, ८९. मुक्तकेशी, ९०. घोररूपा, ९१. महाबला, ९२. अग्निज्वाला, ९३. रौद्रमुखी, ९४. कालरात्रि, ९५. तपस्विनी, ९६. नारायणी, ९७. भद्रकाली, ९८. विष्णुमाया, ९९. जलोदरी, १००. शिवदूती, १०१. कराली, १०२. अनन्ता, १०३. परमेश्वरी, १०४. कात्यायनी, १०५. सावित्री, १०६. प्रत्यक्षा, १०७. ब्रह्मवादिनी, १०८. सर्वशास्त्रमयी।

इस अष्टोत्तर शतनाम की फलश्रुति बतलाते हुए भगवान् शिव ने कहा—हे पार्वती! जो साधक इस दुर्गा अष्टोत्तरशतनाम का नित्य पाठ करता है उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता। वह साधक धन-धान्य, पुत्र-पुत्री, हाथी-घोड़ा तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करता है और आवागन के चक्र से मुक्त हो जाता है। हे पार्वती! जो आराधक नवरात्रों में कुमारी पूजन करके भगवती दुर्गा की पूजा-आराधना और हवन करने के पश्चात् इन एक सौ आठ नामों का पाठ करता है उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

आरती श्री दुर्गा जी

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥ टेक॥
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नैना चंद्रबदन नीको॥ जय॥
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर छाजै॥ जय॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी॥ जय॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योति॥ जय॥
शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥ जय॥
चण्ड मुण्ड संघारे, शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय॥
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमलारानी। आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय॥
चौंसठयोगिनीमंगलगावत, नृत्यकरतभैरूं। बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू॥ जय॥
तुम हो जग की माता तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय॥
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्पर धारी। मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी॥ जय॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥ जय॥
श्री अम्बे जी की आरति जो कोई नर गावै। कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥ जय॥
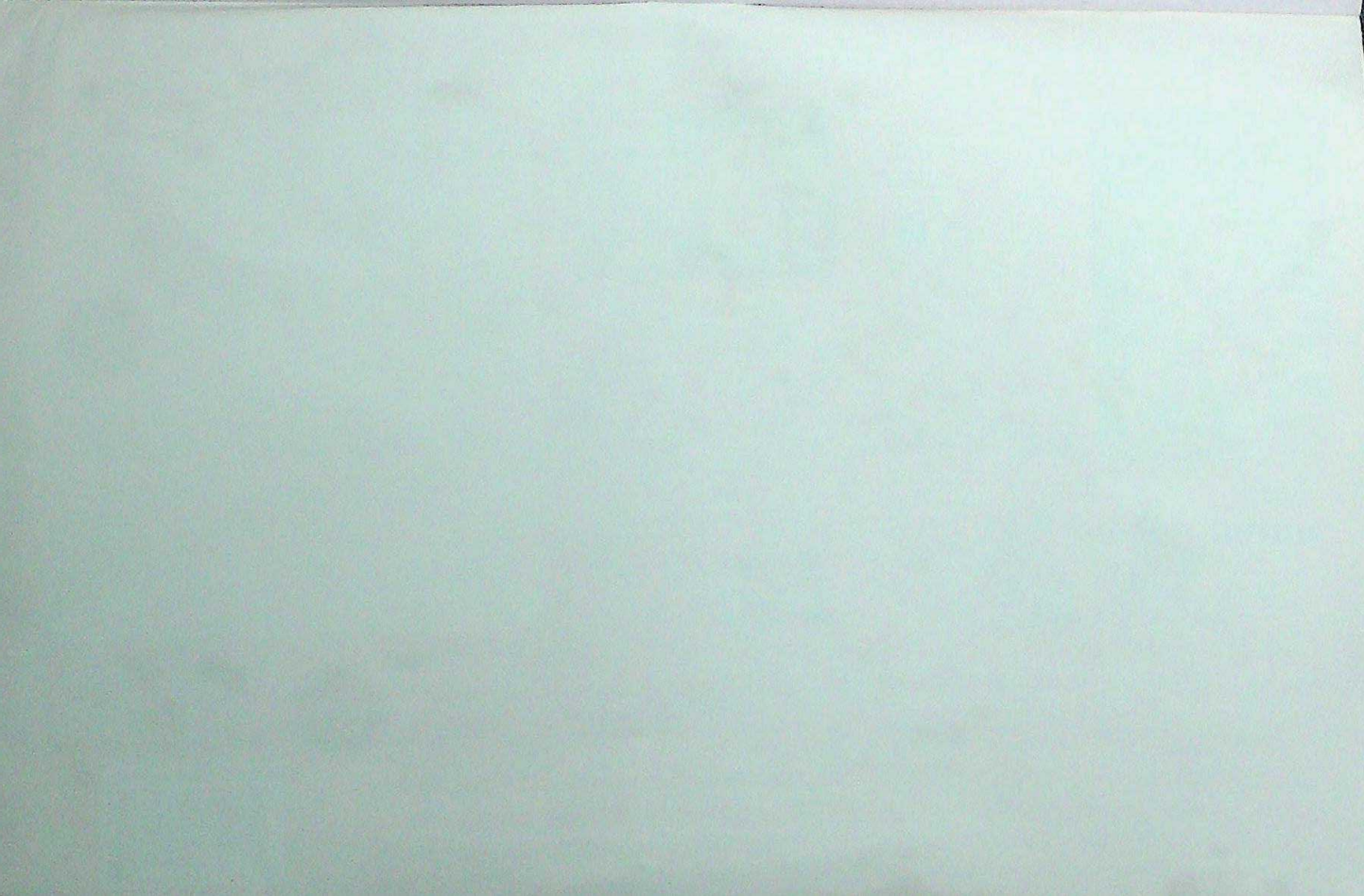
पूजा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें

मंदिरों तथा धार्मिक उत्सवों में पुस्तकें भेंट करने वाले श्रद्धालु सज्जन प्रकाशक से सम्पर्क करें, उन्हें पुस्तकें कम से कम मूल्य पर दी जाएंगी।

प्रकाशक:- पूजा प्रकाशन, दिल्ली, फोन: 23626450, 23625241, मो. 9811873658
PUBLISHED BY: POOJA PRAKASHAN, DELHI (INDIA)
Email: gargbooks@yahoo.co.in, sales@poojaparkashan.com
Website: www.poojaparkashan.com